

आम सस्कृते

81

आम सस्कृते

81



महाका

ॐ नमः श्री महाकालाय ॥ ॥ प्रमथगिरि सादवं कुरुनागेर्विरुषिमं ॥ द्विष्टुजाई विरुक्त  
मं प्रहलिकु म के म्वने ॥ ॥ प्रथमं मवतु मगना दो विरुक्त न हित्वा संयतात्मा क्रमा  
मिपत्तवाहत्वा ॥ अटिति सर्व सत्ता द्रव गह मा श्री महाकाल मात्मानं रावयत् ॥ तदिदं त्रिंश  
थमं प्रमोष हा वं कृताना नागे ॥ श्री देवं पूषा ध्रुव मात्मा दिकं ये हृदि कं कुरु को वं दृष्ट्वा प्रजादि  
कं का वयत् ॥ प्रवगा दृष्ट्वा महा शैव वपा यादि दगनी पश्य चतुर्भु विहा वा ला वयत् ॥ ॥ कवा  
दि न्या गभरु र्यात् ॥ वाम हस्त श्रु का वं ॥ दक्षिण श्रु पृष्ठ ना धिष्ठानं ॥ ॐ हूं ॥ हृदि ॥ हूं गिरि गि

वसि ॥ हक ७ ॥ हूं कटांगाय ॥ चतुष्टय मम प्रितं ॥ चतुर्वदिता चतुर्भु सिंहासनं पविता मय श्रु  
गां वा वयत् ॥ तदनं कुरु प्रजा कृत मगनी वं दृष्ट्वा ॥ स्वरा वपुश्चा ४ सर्व धर्मी नां स्वरा वपुश्चा हं ॥  
शुभ्यगा हाने च ज स्वरा वात्म का हं ॥ अति शिवा का मयै वं नं संप्रवि मता त्रिजला ये निमउला  
पविम वृमउल विवेक लिला यत्रिंशं कटांग ना दवयं को वं ग विषय मय दलं ग इय त्रिंशं गते  
वविलु क्का वतं स्या यत्रिंशं श्री महाकाल रदा वकं द्विरुक्तं क मूखं कुरु व हं वेक वडुल प्रित  
उं स गं ग म उमा ला लं क गं श्री वं उर्ध्व विरुक्तं क मं स्वा गन हं उष्टा का ट र्या न कं श्रुष्ट ना गा वि



महाका

हृषिकेश्वरं वन्द्यं लब्ध्वा दत्तं महाभक्तं यश्च कथा लालं हनं समयं दंष्ट्रा त्वमोलिनं यश्च मूढा वि  
हृषिकेश्वरं व्याघ्रं चर्मकेटि यष्टं दंष्ट्रिणं न कर्षिध्वं वामं च जनकपालं खेदांगधविभं लाल  
जिह्वं यश्च वृद्धिं मुखं महाकाली स्वाहा गुणसंगिभं उवं हनं लावयत ॥ लगवती महाकाली  
हृष्टांगजावीजनिष्पन्ननिनाहवंगं उद्विगलकंगवामकपालांगीरेहावकंदक्रि।। नदष्ट  
नक्तं भावजकर्षिध्वं लगवतीं धालिं गिती लितां लावयत ॥ ॥ नमा पूर्यादिदं क्रि।। य  
शिमाहनादिदलेषू कावीजं काली ॥ कवीजं काला ॥ वंवीजं वला ॥ वंवीजं वला ॥ सर्वा

[illegible]











18

1815-1816